भारत के एकीकरण में सरदार पटेल की भूमिका : जूनागढ़ और हैदराबाद के विशेष सन्दर्भ में

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

के

इतिहास (सामाजिक विज्ञान संकाय)

में

पी-एच॰ डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोध पर्यवेक्षक
डॉ अमीर अली खान
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,दरभंगा

शोधार्थी
अखिल वर्मा
वर्ग क्रमांक –**E2210003**
PAT 2021-22

शोध परियोजना प्रारूप

1.शोध शीर्षक :

भारत के एकीकरण में सरदार पटेल की भूमिका :जूनागढ़ और हैदराबाद के विशेष सन्दर्भ में

2.प्रस्तावना (शोध के मुद्दे) :

लौह पुरुष के नाम से प्रसिद्ध सरदार वल्लभ भाई पटेल एक सच्चे देशभक्त थे। आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में पटेल ने भारतीय गणराज्य में रियासतों के एकीकरण का कठिन कार्य जिस योग्यता से किया, वह सदैव स्मरणीय रहेगा। उनका चरित्र अद्‌भुत अनुशासन प्रियता, अपूर्व संगठन–शक्ति, शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता से परिपूर्ण था जो कि समाज के लिए अनुकरणीय था। स्वभाव से सरदार पटेल निर्भीक थे। कर्म उनके जीवन का साधन था एवं देश सेवा उनकी साधना थी। उनका राजनैतिक योगदान देश के व्यापक हित से जुड़ा हुआ होने के कारण ही उनको भारत का बिस्मार्क भी कहा जाता है।

सरदार वल्लभभाई पटेल ने 1947 में आजादी के बाद भारत के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उपप्रधानमंत्री और गृह मंत्री के रूप में, उन्हें रियासतों को एकजुट राष्ट्र में एकीकृत करने के महत्वपूर्ण कार्य का सामना करना पड़ा। सरदार पटेल ने रियासतों को भारत में शामिल करने के लिए कूटनीतिक चतुराई और दृढ़ता के संयोजन का इस्तेमाल किया। उनके प्रयास से जूनागढ़, हैदराबाद और जम्मू–कश्मीर सहित 500 से अधिक रियासतों को भारतीय संघ में मिलाया जा सका। राष्ट्रीय एकीकरण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने भारत को छोटी, स्वतंत्र इकाइयों में विभाजित होने से रोका। एकीकरण प्रक्रिया चुनौतियों से रहित नहीं थी, लेकिन पटेल के दृढ़ संकल्प, रणनीतिक कौशल और आवश्यकता पड़ने पर बल के उपयोग ने एकीकृत और विविध राष्ट्र को आकार देने में मदद की जिसे आज हम जानते हैं। भारत की एकता में उनके योगदान को व्यापक रूप से स्वीकार और सम्मान किया जाता है।

सरदार पटेल 1947 में भारत के विभाजन से बहुत दुखी थे। हालांकि उन्होंने राजनीतिक वास्तविकताओं और सांप्रदायिक तनाव को पहचाना जिसके कारण एक अलग मुस्लिम राज्य (पाकिस्तान) की मांग हुई, लेकिन वे बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक हिंसा से बहुत व्यथित थे।

विभाजन के कारण लाखों लोगों का विस्थापन हुआ। अखंड भारत के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के बावजूद, पटेल ने उस समय व्यावहारिक रूप से विभाजन को एक अपरिहार्य वास्तविकता के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने विशेष रूप से सांप्रदायिक दंगों, प्रवासन और धार्मिक आधार पर आबादी के बड़े पैमाने पर विस्थापन की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करते हुए सत्ता के सुचारू और व्यवस्थित हस्तांतरण को सुनिश्चित करने के लिए अथक एवं सफल प्रयास किया।

महात्मा गांधी को लिखे एक पत्र में, पटेल ने विभाजन के दौरान सामने आने वाली घटनाओं पर अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा, ''हर पल की देरी अब हमारे इतिहास में एक काला अध्याय जोड़ती है और हमारे कार्य को और अधिक कठिन बना देती है।'' पटेल ने विभाजन के साथ हुई भारी मानवीय त्रासदी को पहचाना और जितना संभव हो सके इसके प्रभाव को कम करने की कोशिश की। सरदार पटेल का भारत के लिए विचार एकता, अखंडता और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों में निहित था। स्वतंत्र भारत के प्रमुख वास्तुकारों में से एक के रूप में, उन्होंने एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की जो धार्मिक, भाषाई और क्षेत्रीय विविधताओं से परे एक एकजुट राष्ट्र बने। उनका प्राथमिक ध्यान स्वतंत्रता के बाद रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत करने पर था। पटेल का दृढ़ विश्वास था कि विभाजित और खंडित भारत बाहरी खतरों और आंतरिक संघर्षों के प्रति संवेदनशील होगा। कूटनीति, बातचीत और जब आवश्यक हो, निर्णायक कार्रवाई के संयोजन के माध्यम से, उन्होंने एक एकीकृत राष्ट्र बनाने के लिए विविध रियासतों को सफलतापूर्वक एक साथ लाया।

सरदार पटेल ने भारतीय संविधान के धर्मनिरपेक्ष आदर्शों का भी समर्थन किया। वह एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध थे जहां विभिन्न धर्मों और पृष्ठभूमि के लोग सौहार्दपूर्ण ढंग से रह सकें। उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण, नेतृत्व और भारत की एकता के प्रति प्रतिबद्धता ने उन्हें ''लौह पुरुष'' की उपाधि दी। संक्षेप में, सरदार पटेल का भारत का विचार एक मजबूत, एकजुट और समावेशी राष्ट्र का था जो लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर दृढ़ रहते हुए अपनी विविधता का जश्न मनाता था।

सरदार पटेल ने भारत के पश्चिमी भाग में स्थित जूनागढ़ रियासत के एकीकरण में फिर से उसी तरह का उत्साह दिखाया, यह नव स्वतंत्र राष्ट्र की एकता को बनाए रखने के लिए

उनके रणनीतिक कौशल और समर्पण का एक और प्रमाण है। 1947 में, जूनागढ़, जिसका शासक एक मुस्लिम था, ने हिंदू–बहुल आबादी होने के बावजूद, पाकिस्तान में शामिल होने का फैसला किया। इस निर्णय से तनाव फैल गया और भारत की धार्मिक और क्षेत्रीय अखंडता के बारे में चिंताएँ बढ़ गईं। उपप्रधानमंत्री और गृह मंत्री के रूप में सरदार पटेल ने स्थिति से निपटने के लिए कड़ा रुख अपनाया। पटेल ने समाधान लाने के लिए जूनागढ़ में राजनयिक दबाव और लोगों के समर्थन के संयोजन का इस्तेमाल किया। जूनागढ़ के लोगों ने, अपने दीवान (प्रधान मंत्री) शाह नवाज भुट्टो के नेतृत्व में, पाकिस्तान में शामिल होने के फैसले के खिलाफ विद्रोह किया। इसके बाद भारत सरकार ने जूनागढ़ में जनमत संग्रह कराया, जिसमें बहुमत ने भारत में विलय के पक्ष में मतदान किया। जूनागढ़ मुद्दे को सरदार पटेल की चतुराई से संभालने से लोगों की इच्छा को बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने की उनकी प्रतिबद्धता प्रदर्शित हुई कि रियासतें स्वतंत्र भारत के धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक आदर्शों के साथ जुड़ी हुई हैं।

हैदराबाद का भारत में एकीकरण देश को एकजुट करने के सरदार पटेल के प्रयासों का एक दिलचस्प अध्याय है। निजाम द्वारा शासित हैदराबाद, सबसे बड़ी और सबसे धनी रियासत थी, और इसका अधिग्रहण एक जटिल और नाजुक काम था। हैदराबाद के निजाम, मीर उस्मान अली खान ने शुरू में स्वतंत्रता की इच्छा व्यक्त की थी, और ऐसी चिंताएँ थीं कि हैदराबाद एक अलग, संप्रभु राज्य बन सकता है। हालाँकि, सरदार पटेल भारत की क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित करने के लिए दृढ़ थे। सितंबर 1948 में, पटेल ने हैदराबाद को भारत में एकीकृत करने के लिए एक सैन्य हस्तक्षेप, ऑपरेशन पोलो शुरू किया। भारतीय सशस्त्र बलों ने निजाम की सेनाओं, जिन्हें रजाकारों के नाम से जाना जाता है, द्वारा किए गए प्रतिरोध को कुचलने के लिए तेजी से कार्रवाई की। ऑपरेशन सफल रहा और हैदराबाद भारत में शामिल हो गया। हैदराबाद के एकीकरण में सरदार पटेल की भूमिका ने राष्ट्र की एकता को बनाए रखने के लिए उनके दृढ़ दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया। हैदराबाद में जटिल स्थिति को सफलतापूर्वक संभालकर, पटेल ने एकजुट भारत के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और देश के व्यापक हित के लिए राजनयिक और सैन्य चुनौतियों से निपटने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया। हैदराबाद के भारत में सफल एकीकरण ने पटेल की ''भारत के लौह पुरुष'' के रूप में प्रतिष्ठा को और मजबूत किया।

3.पूर्व अध्ययन (साहित्यिक सर्वेक्षण) :

सरदार पटेल बहुत ही चर्चित व्यक्तित्व के रूप में रहे हैं और इन पर अनेक विद्वानों द्वारा शोध कार्य किया गया है। इस सन्दर्भ में हिंडोल सेन गुप्ता ने **द मैन हु सेव्ड इंडिया सरदार पटेल एंड हिज आइडियाज** ,पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया प्रकाशन में आधुनिक इतिहास में शायद कोई राजनीतिक हस्ती नहीं है जिसने भारतीय राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सरदार वल्लभभाई पटेल से अधिक काम किया हो। पटेल ने एक नए लोकतांत्रिक, स्वतंत्र राष्ट्र का निर्माण करने के लिए रियासतों को ब्रिटिश भारत के साथ जोड़कर भारत का नक्शा तैयार किया। यदि महात्मा गांधी भारत के स्वतंत्रता संग्राम के आध्यात्मिक केंद्र थे और जवाहरलाल नेहरू इसके रोमांटिक आदर्शवाद थे, तो यह सरदार पटेल ही थे जो महत्वपूर्ण व्यावहारिकता लेकर आए जिसने राष्ट्रीय आंदोलन और स्वतंत्र भारत के पहले विचारों को एक साथ रखा। स्वाभाविक रूप से शांत स्वभाव के व्यक्ति पटेल ने, गांधी या नेहरू के विपरीत, कोई व्यक्तिगत इतिहास नहीं लिखा। उनका मशहूर तर्क था कि इतिहास लिखने से बेहतर है उसे बनाना।

सरदार पटेल की **मुसलमान और शरणार्थी** पी एन चोपड़ा और प्रभा चोपड़ा द्वारा सम्पादित प्रभात प्रकाशन, में सरदार पटेल देश की अंतर्बाह्य सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे और इस संबंध में किसी तरह का जोखिम लेना उचित नहीं समझते थे। पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान (अब बँगलादेश) से भागकर आए शरणार्थियों के प्रति सरदार पटेल का दृषटिकोण अत्यंत सहानुभूतिपूर्ण था। उन्होंने शरणार्थियों के पुनर्वास एवं उनकी सुरक्षा हेतु कोई कसर बाकी न रखी और हरसंभव आवश्यक कदम उठाए। प्रस्तुत पुस्तक में मुसलमानों और शरणार्थियों के प्रति सरदार पटेल के स्पष्ट, व्यावहारिक एवं सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण को स्पष्ट किया गया है। इससे पता चलेगा कि किस प्रकार उन्होंने पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान से आए शरणार्थियों की सुरक्षा की।

उर्विश कोठरी की पुस्तक **"ए प्लेन, ब्लंट मैन द एसेंशियल सरदार वल्लभभाई पटेल"** अलेफ बुक कंपनी प्रकाशन में सरदार वल्लभभाई पटेल भारत के सबसे प्रमुख संस्थापकों में से एक थे और आजीवन गांधीवादी और कांग्रेसी रहे, उन्हें आज भी देश की आजादी की लड़ाई में निभाई गई प्रमुख भूमिका और नव स्वतंत्र राष्ट्र के उथल–पुथल भरे प्रारंभिक वर्षों के दौरान, रियासतों के विलय और एकीकरण के मामले में जिस चतुराई के साथ काम किया गया, के

लिए याद किया जाता है। भारतीय संघ के साथ, महात्मा गांधी की हत्या के बाद आरएसएस पर प्रतिबंध, और जिस दृढ़ता के साथ उन्होंने विभाजन के बाद कानून और व्यवस्था की स्थिति को संभाला। 1950 में उनकी मृत्यु के बाद के वर्षों में, उनका कद बढ़ता ही गया और कई पार्टियों ने अपने राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए उन्हें अपने साथ लेने की कोशिश की। निर्विवाद सत्यनिष्ठा और दृढ़ विश्वास वाले व्यक्ति, सरदार पटेल कभी भी किसी भी मुद्दे पर अपने विचार रखने से नहीं कतराते थे, चाहे वह कितना भी विवादास्पद क्यों न हो। इस पुस्तक में रियासतों के विलय, भारतीय धर्मनिरपेक्षता, अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा की आवश्यकता, नेहरू के साथ उनके मतभेद, गांधी के प्रति उनकी श्रद्धा, सांप्रदायिक राजनीति के प्रति उनकी अरुचि, सहित विभिन्न विषयों पर उनके महत्वपूर्ण लेखन और सोच को एक साथ लाता है।

वी पी मेनन की पुस्तक **इंटीग्रेशन ऑफ दी इंडियन स्टेट्स** ओरिएंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड 2014 में भारतीय राज्यों के एकीकरण में लेखक 554 रियासतों के भारतीय संघ में विलय के बारे में लिखते हैं। स्वतंत्रता के बाद भारतीय प्रशासन के सामने यह सबसे कठिन कार्यों में से एक था। सरदार पटेल ने वी. पी. मेनन के साथ मिलकर रियासतों को भारत का हिस्सा बनने के लिए मिलकर काम किया। इस पुस्तक में भारतीय राज्यों के एकीकरण में प्रत्येक रियासत के साथ की गई बातचीत का विवरण दिया गया है। लेखक ने प्रत्येक राज्य के मामले को उठाया है और इस बात का व्यापक विवरण दिया है कि कैसे उन्हें विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए राजी किया गया, जिसने अंततः भारत को एकजुट किया।

पी एन चोपड़ा की पुस्तक **द सरदार ऑफ इंडिया : बायोग्राफी ऑफ वल्लभभाई पटेल** कोणार्क पब्लिशर प्राइवेट लिमिटेड, में आधुनिक भारत के वास्तुकार, सरदार पटेल महानों के समकालीन क्षेत्रों में एक तरह से उपेक्षित व्यक्तित्व बने रहे। वह गांधीवादी, दृढ़ निश्चयी, स्पष्टवादी, व्यावहारिक और दूरदर्शी थे। वह न केवल एक स्वतंत्रत कार्यकर्ता थे, बल्कि एक कुशल नीति–निर्माता भी थे, जो अखिल भारतीय कांग्रेस को जन आंदोलन के मंच से चुनावी राजनीति में शानदार जीत के माध्यम से देश के राजनीतिक लोकाचार का प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टी के रूप में स्थापित करने में जिम्मेदार थे। स्वतंत्र भारत में, उन्होंने खुद को अग्रणी नेताओं में से एक के रूप में स्थापित किया, जो नवगठित राष्ट्र को उसकी ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए तैयार थे। नेहरू के साथ उन्होंने देश को शिखर पर ले जाने के लिए आदर्श

जोड़ी बनाई। सरदार, उस समय तक लौह पुरुष की लोकप्रिय उपाधि अर्जित कर चुके थे। और यह सच है, गृह मंत्री के रूप में अपने दो साल के कार्यकाल के भीतर, वह 560 से अधिक रियासतों को भारत के संघ में एकजुट करने के हिमालयी कार्य में सफल रहे। इस प्रकार, वह भारत के गणतंत्र को जन्म देने में महत्वपूर्ण भूमिका रही यह पुस्तक एक जमीनी स्तर के संगठनकर्ता, एक स्वतंत्रता सेनानी, एक जन नेता, चुनावी राजनीति के शिल्पकार, एक अंतर्दृष्टिपूर्ण योजनाकार और आधुनिक भारत के निर्माता के कई चरणों के माध्यम से उनके उत्थान को दर्शाती है।

सरदार पटेल की पुस्तक **"भारत विभाजन"** प्रभात प्रकाशन में पटेल पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने के उद्देश्य से स्वतंत्रता आदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके संपूर्ण राजनीतिक जीवन में भारत की महानता और एकता ही उनका मार्गदर्शक सितारा रहा। सरदार पटेल दो समुदायों के बीच आंतरिक मतभेद उत्पन्न करके 'बाँटो और राज करो' की ब्रिटिश नीति के कट्टर आलोचक थे। भारत की एकता को बनाए रखना उनकी सबसे बड़ी चिंता थी। लॉर्ड माउंटबेटन ने 3 जून,1947 को अपनी योजना घोषित की। इसमें बँटवारे के सिद्धांत को स्वीकृ ति दी गई। इस योजना को कांग्रेस और मुसलिम लीग ने स्वीकार किया। सरदार पटेल ने कहा कि उन्होंने विभाजन के लिए सहमति इसलिए दी, क्योंकि वह विश्वसनीय रूप से समझते थे कि '(शेष) भारत को संयुक्त रखने के लिए इसे अब विभाजित कर दिया जाना चाहिए। ' सरदार पटेल के विस्तृत पत्राचार के आधार पर प्रस्तुत पुस्तक में भारत विभाजन किन परिस्थितियों में और किन–किन कारणों से हुआ, भारतीय नेताओं की मनःस्थिति तथा तत्कालीन समाज की मनःस्थिति का साक्ष्यों के प्रकाश में विस्तृत वर्णन किया गया है

आर एन पी सिंह की पुस्तक **"सरदार पटेल यूनीफायर ऑफ मॉडर्न इंडिया"** वितस्ता प्रकाशन में वल्लभभाई पटेल (1875–1950) ने न केवल भारत के मानचित्र पर बल्कि यहां के लोगों के दिमाग पर भी अपनी छाप छोड़ी। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने राष्ट्र को एकीकृत भारत का विचार दिया था और उन्हें 'लौह पुरुष' कहा जाता है, उनके पास एक अद्भुत दूरदर्शिता और स्वतंत्र भारत का भविष्य कहां है, इसकी स्पष्ट दृष्टि थी। वह एक महान राजनेता थे जो समस्याओं के प्रति अपने दृष्टिकोण में चतुराई और प्रासंगिकता के दुर्लभ गुण से संपन्न थे। वह कई मायनों में बिस्मार्क से भी बढ़कर थे। 565 रियासतों के भारत संघ में विलय के लिए उनका निर्णायक दृष्टिकोण धैर्य, साहस और हिम्मत की प्रतिमूर्ति है। यह इस बात की

कहानी है कि कैसे एक व्यक्ति, जिसे 'गांधी के संघर्ष का अचूक धनुर्धर माना जाता है...जो पीछे हटना नहीं जानता था' ने राजकुमारों के भारत को लोगों का भारत बनाने के लिए लुभाया, फुसलाया और मजबूर किया। पटेल आश्वस्त थे, 'छोटे राज्य भारतीय एकता को खतरे में डाले बिना स्वतंत्र इकाई के रूप में अस्तित्व में नहीं रह सकते' और इस पुस्तक में जूनागढ़ से पटना, त्रावणकोर से जम्मू–कश्मीर तक, यानी दो–तिहाई भूमि के एकीकरण के बारे में बताया गया।

4.अध्ययन का उद्देश्य, महत्व एवं प्रासंगिकता :

सरदार पटेल बहुत चर्चित व्यक्तित्व के रूप में रहे है और उनके द्वारा भारत के एकीकरण का कार्य भारत के लोग सदैव ऋणी है। सरदार पटेल ने अपने कूटनीतिक कौशल और दूरदर्शिता से रियासतों के एकीकरण को प्रभावी ढंग से संभाला। उन्होंने दृढ़ नीति का पालन किया और यह स्पष्ट कर दिया कि वह भारत के भीतर किसी भी राज्य के स्वतंत्र और अलग–थलग रहने के अधिकार को मान्यता नहीं देते हैं। पटेल ने राजाओं की देशभक्ति और राष्ट्रीय भावनाओं की भी अपील की और उन्हें राष्ट्रीय हित में एक लोकतांत्रिक संविधान के निर्माण में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने उन्हें रक्षा, विदेशी मामले और संचार भारत सरकार को सौंपने के लिए राजी किया। इस प्रकार शोध परियोजना का उद्देश्य निम्नलिखित रहेगा –

- स्वतंत्र भारत में देसी रियासतों के एकीकरण के स्वरुप का मूल्यांकन करना।
- देसी रियासतें को सफलतापूर्वक एकीकृत करने में सरदार पटेल की कार्यप्रणाली का अध्ययन करना। (जूनागढ़ और हैदराबाद के विशेष सन्दर्भ में)
- सरदार पटेल के एकीकरण सम्बन्धी कार्यप्रणाली का वर्तमान समय में कहाँ तक प्रासंगिक है, इस तथ्य का अध्ययन करना।

भारत के एकीकरण में सरदार पटेल की भूमिका की वर्तमान में भी महत्व और प्रासंगिकता है। आज भी भारत एक विविधतापूर्ण देश है। इसमें विभिन्न धर्म, संस्कृति, भाषा और जाति के लोग रहते हैं। इन सभी लोगों को एकजुट रखने के लिए भारत के एकीकरण की भावना को बनाए रखना आवश्यक है। सरदार पटेल ने हमें यह दिखाया है कि एकता के लिए सामंजस्य, समझ और सहयोग की आवश्यकता होती है।सरदार पटेल की भूमिका भारत के

इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है। उनकी उपलब्धियों को याद रखना और उनसे सीखना आवश्यक है। उनके आदर्शों का अनुसरण करके हम भारत को एक मजबूत और समृद्ध राष्ट्र बना सकते हैं।

5.ज्ञान के क्षेत्र में योगदान :

इस शोध के माध्यम से सरदार पटेल के द्वारा भारत के एकीकरण की प्रक्रिया में किये गए महत्वपूर्ण प्रयासों का अध्ययन किया जायेगा। ध्यातव्य है कि पटेल एक निस्वार्थ नेता थे, जिन्होंने देश के हितो का हर चीज से ऊपर रखा और भारत के भाग्य को एकनिष्ठ भक्ति के साथ आकार दिया। यह इस शोध के सार के रूप में सामने आएगा।

6.अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तावित शोध परियोजना का अध्ययन क्षेत्र भारत के एकीकरण को लेकर सरदार पटेल द्वारा अपनाई गई कूटनीतिक और सैन्य रणनीति का अध्ययन किया जायेगा। इसके साथ ही जूनागढ़ और हैदराबाद के लोगों के एकीकरण के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन किया जा सकता है। इस अध्ययन से हमें सरदार पटेल की भूमिका और उनके एकीकरण के प्रयासों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होगी। यह अध्ययन भारत के एकीकरण की ऐतिहासिक प्रक्रिया को समझने में भी मदद करेगा।

7.अध्ययन पद्धति :

प्रस्तुत शोध विषय में प्रचलित शोध प्रविधियों का प्रयोग करते हुए प्राथमिक स्रोतों एवं द्वितीयक स्रोतों से जानकारी एकत्र करने का प्रयत्न किया जायेगा। तत्पश्चात प्राथमिक स्रोतों एवं द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन तुलनात्मक विश्लेषण के दृष्टिकोण से किया जायेगा। इस सन्दर्भ में महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रयोग आवश्यक रहेगा। साथ ही साथ सरकारी दस्तावेजों एवं विभिन्न समाचार पत्र व पत्रिकाओं का विश्लेषण किया जायेगा।

8.शोध सामग्री की उपलब्धता :

शोध हेतु सामग्री बनाने में विभिन्न संस्थानों, ग्रंथों , पत्र–पत्रिकाओं को माध्यम बनाया जायेगा। भारत सरकार द्वारा प्रकाशित रिपोर्टें, भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार, नेहरू मेमोरियल संग्रहालय, संसद भवन पुस्तकालय रिकॉर्ड्स, दिल्ली, गुजरात स्टेट आर्काइव,अहमदाबाद, तेलंगाना स्टेट आर्काइव एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, हैदराबाद डायरेक्टरेट ऑफ आर्काइव,मुंबई भारत के समसामयिक इतिहास के पुरालेख, आदि में पर्याप्त मात्रा में रिकॉर्ड्स उपलब्ध हैं जिसका उपयोग शोध में किया जायेगा।

9.परिकल्पना : प्रस्तुत शोध निम्न परिकल्पनाओं पर आधारित होगा –

- ❖ देसी रियासतें ब्रिटिश भारत के प्रत्यक्ष नियंत्रण में नहीं थी इसलिए आजादी के बाद रियासतों ने स्वतंत्र रहने का दावा किया।
- ❖ स्वतंत्रता के बाद भारत संघ की एकता और अखंडता को सुनिश्चित रखने में पटेल की रियासत सम्बन्धी नीति का महत्वपूर्ण योगदान रहा।
- ❖ सरदार पटेल के प्रयासों के कारण भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र बना और उसकी एकता अक्षुण्ण बनी रही।

10.कार्य योजना :

प्रस्तावित शोध कार्य की निम्नलिखित अध्यायों के अंतर्गत संपन्न किया जायेगा –

प्रथम अध्याय – भूमिका

द्वितीय अध्याय – सरदार पटेल का जीवन वृत्त

तृतीय अध्याय – स्वतंत्रता पूर्व देशी रियासतों एवं भारतीय राजनीति का परिदृश्य

चतुर्थ अध्याय – जूनागढ़ का भारत में विलय

पंचम अध्याय – हैदराबाद का भारत में विलय

षष्ठ अध्याय – अन्य देसी रियासतों का भारत में एकीकरण

सप्तम अध्याय– निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

11.सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

प्राथमिक स्रोत :

1.राष्ट्रीय अभिलेखागार,दिल्ली

2.संसद भवन पुस्तकालय रिकॉर्ड्स,दिल्ली

3.गुजरात स्टेट आर्काइव,अहमदाबाद

4.तेलंगाना स्टेट आर्काइव एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, हैदराबाद

5.डायरेक्टरेट ऑफ आर्काइव,मुंबई

6.गवर्नमेंट ऑफ इंडिया (1948): "वाइट पेपर ऑन हैदराबाद ", नई दिल्ली : गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, पब्लिकेशन्स डिवीजन

द्वितीयक स्रोत :

1.सेनगुप्ता, हिंडोल : ए मैन हु सेव्ड इंडिया सरदार पटेल एंड हिज आईडिया ऑफ इंडिया , पेंगुइन रैंडम हाउस , नई दिल्ली 2018

2.गांधी,राजमोहन : पटेल ए लाइफ, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस ,अहमदाबाद , 1990

3.चोपड़ा ,पी एनः सरदार पटेल कश्मीर एवं हैदराबाद ,प्रभात प्रकाशन , दिल्ली 2018

4.दास, अजय : सरदार पटेल बिस्मार्क ऑफ इंडिया लाइफ एंड पोलिटिकल आइडियोलॉजी ,ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली 2016

5.चोपड़ा, पी एन और चोपड़ा, प्रभाः मुसलमान और शरणार्थी,प्रभात प्रकाशन , दिल्ली 2018

6.मेनन, वी पी :इंटीग्रेशन ऑफ द इंडियन स्टेट्स ,ओरिएंट ब्लैकस्वान प्रकाशन, दिल्ली ,2020

7.कोठरी, उर्विश : ए प्लेन, ब्लंट मैन द एसेंशियल सरदार वल्लभभाई पटेल, अलेफ बुक कंपनी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023

8.कृष्णा,बलराज :सरदार वल्लबभाई पटेल यइंडिआस आयरन मैन,रूपा पब्लिकेशन,दिल्ली, 2014

9.सिंह, आर एन पी : सरदार पटेल यूनीफायर ऑफ मॉडर्न इंडिया, वितस्ता प्रकाशन,नई दिल्ली, 2018

10.चोपड़ा, पी एन : द सरदार ऑफ इंडिया : बायोग्राफी ऑफ वल्लभभाई पटेल कोणार्क पब्लिशर प्राइवेट लिमिटेड,नई दिल्ली, 2018

11.देसाई, महादेव :द स्टोरी ऑफ बारदोली सत्याग्रह, एल जी पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स ,नयी दिल्ली 2017

12.सिंह,नीरजा : गांधी पटेल पत्र और भाषण सहमति के बीच असहमति,नेशनल बुक ट्रस्ट , नयी दिल्ली , 2014

13.नूरानी, ए जी : द डिस्ट्रक्शन ऑफ हैदराबाद, तूलिका बुक्स प्रकाशन,दिल्ली , 2014

14.अग्रवाल, जस्टिस एस एन : सरदार पटेल सुप्रीम आर्किटेक्ट इन यूनिफिकेशन ऑफ इंडिया भाग 1, गरुड़ प्रकाशन , नयी दिल्ली, 2020

15.शंकर, वी : सरदार पटेल –चुना हुआ पत्र व्यहवार (1945–50), नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद ,2011

16.पटेल,सरदार : सिलेक्टेड स्पीचेस एंड राइटिंग्स ऑफ वल्लभभाई पटेल, पेंगुइन रैंडम हाउस ,दिल्ली ,2018

पत्र पत्रिकाएं :

1.द टाइम्स ऑफ इंडिया

2.द स्टेट्समैन

3.हिंदुस्तान टाइम्स

4.इतिहास दर्पण

5.इतिहास

6.इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू

7.आकाशवाणी

8.इंडियन जर्नल ऑफ पोलिटिकल साइंस

9.बॉम्बे क्रॉनिकल्स

शोध पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर **शोधार्थी का हस्ताक्षर**